शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वैश्वीकरण में ग्रामीण समाज और हिन्दी कथा साहित्य

डॉ. सादिक मोहम्मद खान (शोधार्थी)
स्कूल ऑफ़ सोशल साईंसेस
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

प्रस्तावना

आधुनिक युग के प्रादुर्भाव के साथ-साथ वैश्वीकरण , भूमण्डलीकरण, बाजारवाद, नव साम्राज्यवाद जैसे कारकों ने नगरीय व ग्रामीण परिवेश व जीवन को सीधे-सीधे प्रभावित किया है। वैश्वीकरण की इन हवाओं ने सामाजिक व सांस्कृतिक प्रतिमानों को प्रभावित किया है। अठारहवीं शताब्दी तक दुनिया का इतिहास सामान्यतः अपने-अपने महाद्वीपों में ही बन्द रहा, राज्यों का निर्माण हुआ, पारस्परिक व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बंध भी रहे, युद्ध भी हुए अंन्तर्राष्ट्रीयता के बीच वैश्वीकरण की प्रक्रिया और इच्छा आदिकाल से ही परिलक्षित होती है। व्यापारिक व सांस्कृतिक आदान-प्रदानों ने एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रकिया को जन्म दिया। वैश्वीकरण का अर्थ है विश्व के सभीराष्ट्रों को परस्पर संबंधों के सूत्र में बंध जाना। अठाहरवीं शताब्दी के बाद जब वैज्ञानिक विकास तीव्र गति से हुआ तो अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध और भी अधिक घनिष्ठ हो गये। वैज्ञानिक सुविधाओं ने जो संचार साधन उपलब्ध कराये वे इस दिशा में क्रांतिकारी सिद्ध हुए। सभी राष्ट्र अपने-अपने स्वार्थो को केन्द्र में रखकर दूसरे राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध स्थापित करते रहे, परन्तु स्वार्थो की टकराहट ने राष्ट्रीयता के बोध को और सघन कर दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण समाज और हिंदी कथा साहित्य पर विचार किया गया है

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के राजनैतिक सम्बन्धो में दुनिया के राष्ट्रो को अपेक्षाकृत अधिक निकट कर दिया। सांस्कृतिक व व्यापारिक सम्बन्धों के साथ-साथ राजनैतिक संबंधों में भी निकटता आई। आज वैश्वीकरण,बाजारीकरण,उदारीकरण का प्रभाव हमारे चारों तरफ फैला हुआ इसका प्रभाव दिन - प्रतिदिन बढता ही जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी ने एक ऐसी क्रांति को जन्म दिया है कि सम्पूर्ण विश्व बहुत छोटा हो गया है। इससे सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में तो परिवर्तन आया ही है किन्तु इस प्रौद्यौगिक का सबसे बडा लाभ उद्योग जगत हो हुआ है। जहां तक भारतीय स्थिति की बात है वहां बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कारण भारत के ग्रामो में चलने वाले सभी कुटीर उद्योग धन्धे बन्द हो गए हैं। प्रत्येक क्षेत्र के लघु उद्योग दम तोडकर बैठ गए हैं। वे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पादों का सामना नहीं कर पा रहे हैं। राजनैतिक स्तर पर चाहे जो भी घोषणा हो रही हो परन्तु भारत सरकार भारतीय उद्योगों को बचाने में असमर्थ है। फिर भी इस प्रकिया का दूसरा पक्ष यह है कि भारत की कंपनियां भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का अंग बन कर अपने उत्पादों को विदेशों में प्रचारित और प्रसारित कर रही हैं। वैश्वीकरण बाजारवादी दृष्टीकोण से ही प्रत्येक वस्तु का आंकलन करता है। वह ईश्वर से प्राप्त प्रतिभा को भी खरीदने की बाजारू चीज बना देता है। लोक संस्कृति और उससे जुडी भावनाओं को प्रदर्शन के लिए बाजार

में ले आता है। डांडिया नृत्य जैसे धार्मिक अनुष्ठानों के साथ-साथ सौन्दर्य प्रतियोगिता को व्यापार के लिए आयोजित करता है , सांस्कृतिक विषयों से जुडी भाव नाओं का उपयोग अपने विज्ञापन के लिए करता है। वैश्वीकरण और उदारीकरण का एक स्पष्ट प्रभाव यह दिखाई देता है कि आज का व्यक्ति राष्ट्र को छोडकर अन्तर्राष्ट्रीय बनने का प्रयत्न कर रहा है। बीसवीं शताब्दी में प्रचलित वैश्वीकरण की अवधारणा को ही नव-संस्करण कहा जा सकता है। सन 1960 के दशक में इसका प्रयोग सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रो में किया जाता था। सन 1980 के दशक से यह अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर मजबूती के साथ उत्पन्न हुआ। तत्पश्चात अनेक पाश्चात्य और भारतीय विद्वानें द्वारा इसके स्वरूप निर्धारण के निरन्तर प्रयत्न हो रहे है। परन्तु वर्तमान समय में

ओलम्पिक,टेनिस,फुटबाल,क्रिकेट,सिनेमा,राजनीति आदि ने वैश्वीकरण को और अधिक बढावा दिया है। वैश्वीकरण का संबंध सामाजिक ,सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्र से है। परन्तु आज इसका प्रयोग प्रमुख रूप से आर्थिक क्षेत्र में किया जाता है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कमलनयन काबरा इस संदर्भ में अपना मत प्रस्तुत करते है- वास्तव में भूमण्डलीकरण में मंशा सारी दुनिया को एक मण्डी मे तब्दील कर देना है,एक ऐसी दुनिया जो मण्डी मात्र नही है , अपितु उसका संचालन भी मण्डी की आन्तरिक ताकतों

द्वारा,सामाजिक,वैश्विक जीवन के हर अन्य पक्ष को गौण और मण्डी को पिछल ग्गू बनाकर किया जाता है। यह मत न केवल वकालत करता है,वरन अनेक लोग तो विश्वास करने लगे है कि सचमुच ऐसा ही हो रहा है और यहीं सर्वोत्तम व्यवस्था है।

वैश्वीकरण का स्वरूप

वैश्वीकरण मुक्त बाजार की स्थिति में विश्व की अर्थव्यवस्था के एकीकरण की प्रक्रीया है। मुक्त बाजार में व्यापार और पूंजी का मुक्त प्रवाह होता है। वैश्वीकरण की पहचान नयी विश्व व्यापार व्यवस्था तथा व्यवसायिक बाजारों के खुलने से है। ऐतिहासिक दृष्टि से विश्व में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में आर्थिक एकीकरण के फलस्वरूप वैश्वीकरण की प्रक्रिया का अनुभव किया गया। परन्तु कुछ विद्वान 16वीं शताब्दी से ही इस अवधारणा का आरंभ मानते हैं। अतः वैश्वीकरण की अवधारणा कोई नयी नहीं है। सन 1870 से 1993 के मध्य में माल, पूंजी और श्रम का अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार आवागमन होता था। भूमण्ड लीकरण के इस प्रथम चरण को हान्सबाम ने 1897 में साम्राज्यवाद के युग की संज्ञा दी थी। इसका मूल कारण था कि ब्रिटेन उस समय लगभग पूरी दुनिया पर किसी न किसी रूप में शासन करता था। सम्पूर्ण दुनिया किसी न किसी रूप में ब्रिटेन के अधीन थी। जो कालांतर में अमेरिका को शक्तिशाली राष्ट्र बनने पर स्थानांतरित हो गई। विकीपीडिया पर वैश्वीकरण को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि-वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रिय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते है। यह प्रक्रिया आर्थिक , तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है। वैश्वीकरण का उपयोग अक्सर आर्थिक वैश्वीकरण के सन्दर्भ में किया जाता है , अर्थात व्यापार ,विदेशी प्रत्यक्ष निवेश ,पूंजी प्रवाह ,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रवास और प्रौद्यौगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण।

वैश्वीकरण में ग्रामीण समाज और हिन्दी कथा साहित्य

वैश्वीकरण का दायरा प्रतिदिन बढता जा रहा है। व्यापारिक पूंजीवाद के दौर में फौज के माध्यम से उपनिवेश बनाये गए। औद्यौगिक पूंजीवाद के दौर में टेक्नोलाजी के जरिए उपनिवेष कायम किए गए भूमण्डलीकरण एक तरफ तो आम आदमी को अधिक भौतिक सुख-सुविधाओं से लाद रहा है तो दूसरी तरफ उसकी इंसानियत का अपहरण कर रहा है। आज के समय में किसी व्यक्ति के पास दूसरे व्यक्ति से बात करने तक का समय नही है। इस भूमण्डलीकरण के दौर में यहा हर व्यक्ति या तो ग्राहक है या विक्रेता , भाईचारा, अपनेपन से कोसों दूर है। समाज में पहले विकास का मतलब या भौतिक संपन्नता के साथ सेवा, त्याग, प्रेम, करूणा जैसे मानवीय गुणों का विकास भूमण्डीकरण के इस दौर में विकास का मतलब सभी मानवीय गुणो से रहित और केवल भौतिक सुख- सुविधाओं से समृद्ध होना ही विकास है। भूमण्डीकरण की व्यवस्था के अन्दर संपूर्ण विश्व आज इस प्रकार जुड गया है जिसमें आज के नवीन युग में होने वाले विकास का सीधा संबन्ध प्रत्येक व्यक्ति घटना एवं हर उस चीज पर पडता है। जिसमें मानवीय मानसिकता के साथ-साथ विश्व निर्माण एवं उत्थान के उद्देश्य जुडे हुए है।

वर्तमान समय में भूमण्डलीकरण का प्रभाव कथा साहित्य पर पडा है। साहित्यकार जिस परिवेश को देखता है या जीता है उसका असर उसके साहित्य पर देखा जा सकता है। साहित्य से उत्तम कोई दूसरा माध्यम समाज के नव निर्माण के लिए नहीं है। इस विषय पर हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है- साहित्य सामाजिक मंगल का विद्यालय है। यह सत्य है कि वह व्यक्ति विशेष की प्रतिमा से ही रचित होता है किन्तु और भी अधिक सत्य यह है कि प्रतिमा सामाजिक प्रगति की ही उपज है साहित्य से समाज के नवनिर्माण की प्रक्रिया न कभी रूकेगी , क्योंकि बाधाओं और अवरोधो को तोडकर आगे बढने की क्षमता साहित्य में होती है। वैश्वीकरण का प्रभाव हमारे साहित्य पर भी दिखाई देता है। वैश्वीकरण के दौर में साहित्य रचना करने वाले प्रमुख साहित्यकार है। जगदीश चतुर्वेदी , श्रीकांत वर्मा , राजकमल चौधरी, प्रबोध कुमार , रवीन्द्र कालिया , ज्ञानरंजन, दूधनाथसिंह, गंगाप्रसाद विमल जैसे अनेक साहित्यकारों के साहित्य में भूमण्डलीकरण का प्रभाव दिखाई देता है। मनुष्य की पीडा हताशा, निराशा ऊब, घुटन परेशानी के साथ-साथ मूल्य विघटन की त्रासदी का मार्मिक साक्ष्य प्रस्तुत करती है। श्रीकांत वर्मा की 'झाडी' 'शवयात्रा' दूघनाथ सिंह की 'रक्तपात', रविन्द्र कालिया की 'सिर्फ एक दिन ', जैसी कहानियाँ भूमण्डलीकरण के प्रभाव का प्रमाणिक दस्तावेज हैं। आजादी के बाद देश में नई जीवन स्तिथियाँ पैदा हुई। पहले उत्साह ललक और उसके बाद मोहभंग, निराशा, हताशा, कुण्ठा आदि का वातावरण बना। भूमण्डलीकरण के कारण ग्रामीण समाज का विकास और उसके जीवन में तमाम विसंगतियां और विडम्बनाएँ पैदा हुई। मशीनों का उपयोग बढने से भयानक बेकारी भूखमरी और बेरोजगारी पैदा हुई इन समस्याओं का चित्रण समकालीन वैश्वीकरण के परिवे श में लिख रहे साहित्यकारों के साहित्य में मिलता है। इस कथा साहित्य का व्यक्ति भूमण्डलीकरण के कारण अकेला ऊब गया , संत्रस्त पीडित अजनबियत से

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

घिरा हुआ, थकाहारा ऐसा व्यक्ति है जिसे कोई भविष्य नहीं दिखाई देता । राजकमल चौधरी का 'मछली मरी हुई', वैश्वीकरण के प्रभाव को ही उजागर करती है इसमें जीवन का वह पद प्रधान है जिसकी एक सभ्य समाज में चर्चा करना भी आसान नहीं है। इसमें यौन विषयों को आधार बनाया गया है। समलैंगिक यौनाचार में डूबी हुई स्त्रियों के बारे में लिखा गया है। यह भूमण्डलीकरण का ही कुप्रभाव है। वैश्वीकरण ने व्यक्तिवाद अर्थवाद और इसके लिए काम-क्रीडा को विशेष रूप से सराहा है। जिसके कारण पति-पत्नी का दाम्पत्य प्रेम भी दूषित और घिनौना होता जा रहा है। महेन्द्र भल्ला कृत 'एक पति के नोटस', में इसका पूर्ण स्वरूप सामने आता है इसमे पति अपनी पत्नी से विकृत होकर पडोसी की पत्नी के साथ प्रेम वासना करने लगता है। वैश्वीकरण के प्रभाव ने लोगों को इस कदर जकड लिया है चाहे कितनी कोशिश करें इसके प्रभाव से बच नही सकता। इस प्रकार के वातावरण में दाम्पत्य जीवन भी सुरक्षित नहीं है। उच्चवर्गीय दामपत्य जीवन में बढते जा रहे खोखलेपन,बनावटीपन और मूल्यों के विघटन के संकेत मिले है। सूरजमुखी अंधेरे के, सफेद मेमने और मुर्गीखाना आदि उपन्यासों में असामान्य यौन प्रसंगो को ही उठाया गया है। कहीं विवाह से पहले तो कही विवाह के पश्चात। ये सभी भूमण्डलीकरण के कारण हो रहा है। इसका प्रभाव लोगों पर दिन-प्रतिदिन बढता ही जा रहा है विज्ञान,टेलीविजन,विडियो आदि का चलन इतना बढ गया है समाज में कोई भी व्यक्ति इनके बगैर नही रह सकता। भूमण्डलीकरण इन सभी का प्रतिफलन है। भारतीय परिवेश में नारी का नारीत्व पत्नी और माँ बनकर ही सार्थकता प्राप्त करता है।

भूमण्डलीकरण ने नर-नारी में स्वाभिमान की भावना को बढावा दिया आधुनिकता को उसने फैशन के रूप में ओढ लिया है। इस भूमण्डलीकरण के दौर में नारी के व्यक्तित्व को खंडित कर दिया है। गृहस्थी पर बढता हुआ आर्थिक बोझ और जीवन की चका चौंध ने नारी को नौकरी करने पर विवश कर दिया फलस्वरूप पहले उसका शोषण घर में होता था , अब बाहर भी होने लगा। कुछ मज बूरी में शोषित होती हैं तो कुछ फैशन और अधिक अर्थ के लिए भूमण्डलीकरण के युग में हम देख रहे है कि दुनिया में आर्थिक दीवारे टूट रही है पर आदमी और आदमी के बीच अनगिनत अदृश्य दीवारें खडी हो रही है। बाजार एक हो गया है। समाज विभाजित हो गया । आज के समय में धर्म,राजनीति, समाज,संस्कृति,साहित्य सब शंका के दायरे में आ गए है यथार्थ का वर्णन करते हूए संदेह और विद्रोह लेखक के अस्त्र बन गए है। भूमण्डलीकरण ने सभी मानवीय मूल्यों को क्षत-विक्षत कर दिया है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण के भयानक चेहरे को समकालीन कथाकारों ने अपनी संवेदना के साथ अपनी रचनाओं में दर्ज किया है इस संदर्भ में कैलाश बनवासी की बाजार में रामधन और जय नन्दन की विश्व बाजार में ऊँट। निम्न मध्यमवर्ग की जिन्दगी को इस बाजावाद ने किस तरह तहस-नहस किया है इसका मार्मिक चित्रण किया है काशीनाथ सिंह की कहानी अपना रास्ता लो बाबा, में उपभोक्ता समाज की संवेदनहीनता और सरोकारहीनता का जो चित्रण है वह अनूठा किया गया है। अखिलेश की कहानी जलडमरू मध्य , अपनी विस्तृत संरचना में कई सारे सवालों के साथ बाप-बेटे के रिश्ते में बाजार और

उपभोक्तावादी संस्कृति की चालाकी को व्यक्त करती है वैश्वीकरण ने सही मायनों में जहां बहुत सारी सम्भावनाओं को सुगम बनाया है वहीं एक ऐसी बाजारू संस्कृति का वर्चस्व बढा है जिसमें आस्थाए, मान्यताए, विश्वास, अनुराग, लगाव, मूल्य सब खत्म हुए है। वैश्वीकरण एक चुनौती के रूप में सामने आया इसने ग्रामीण समाज की परिस्थितियों और मनुष्य के स्वभाव को ही परिवर्तित कर दिया है। भूमण्डलीकरण पूंजी का नया खेल है। इसमें फैशन के नित्य बदलते रूप इलेक्ट्रोनिक मिडिया की शक्ति ,विज्ञापन की विविधता, वैश्वीकरण और निजीकरण की चेतना मिलकर ऐतिहासिकता को नकार रही है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से हिन्दी साहित्य जगत में भी खलबल मची हुई। भूमण्डलीकरण बाजारीकरण और उपभोक्तावाद ने व्यक्ति समाज परिवार धर्म , राजनीति, शिक्षा साहित्य को भी अपनी चपेट में ले लिया है। हिन्दी साहित्य की यह पीढी मानवीय सम्बन्धो को लेकर चिंतित है। इनकी कहानियों में मानवीय संबंधो को सामने लाने की पूरी कोशिश लगातार देखनेको मिलती ही है। यह पीढी इलैक्ट्रोनिक मीडिया के अलग-अलग रूपो और सूचना तकनीक के प्रति ज्यादा जागरूक है। मोबाईल इन्टरनेट और फिल्मों का प्रभाव इनकी रचनाओं पर पडा है। चरम उपभोक्तावाद, नये धनिक वर्ग की पार्टियां आत्महत्या कर रहे किसान , अपहरण फिरौती का नया धंधा ,राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में व्यास चरम भ्रश्टाचार , धार्मिक पाखण्ड , भ्रूण हत्याए तथा मीडिया द्वारा रची जा रही एक लुभावनी दुनिया आज के नये यथार्थ के लक्षण है बाजार भूमण्डलीकरण और पूंजीवाद ने साधारण मध्यवर्गीय आदमी को हास्यापद बनाया है। बाजार ने लोगों की कामनाओं को चरम सीमा पर पहुंचा दिया है। पूंजीतंत्र की इस भयावहता को नयी पीढी के कथाकारों ने अपनी कहानी में उतारा है।

संदर्भ ग्रंथ

1 भूमण्डलीकरण, साहित्य सामज और संस्कृति , डा शशि भूषण कुमार पृष्ठ 48

2 भूमण्डलीकरण साहित्य समाज और संस्कृति , डॉ. शशि भूषण कुमार पृष्ठ 5

3 हिन्दी साहित्य का इतिहास , डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ 18 प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली।

4 सामजिक संचेतना और नासिरा शर्मा वैश्वीकरण,स्त्री विमर्श, दलित-चेतना-डॉ. मनीश शर्मा पृष्ठ 27 साहित्यकार प्रकाशन, जयपुर

5 भूमण्डलीकरण: विचार, नीतिया और विकल्प-कमल नयन पृष्ठ 18 संस्थान प्रकाशन दिल्ली

6 http://hi.wikipedia.org